Return gift to dad??

Is the pain for fathers only?
My day starts with an early morning breakfast
Freshly made sandwich or some tasty toast
My day starts with some playful moments
With my beloved daughter
Is the pain for my father only?

My air conditioned car is ready at sharp ten
I'm well dressed with a tie
Heading towards the car with my daughter
I'll drop her school and proceed to my college
I have a full on corporate schedule
Is negligence for my father only?

I want to win over the clock
All those greetings all over the day
My employees running behind me whole day long
I enjoy them a lot

It's 2 pm
I didn't notice when my father arrived
May have skipped his breakfast
But how does it matter to me?
Probably father's pressure today reached 200 by 100
But how does that matter to me?
He might have forgotten to take his medicine
Due to the work pressure
But I'm not quite bothered
I saw him having ginger slices
In the middle of the meeting
Maybe he was very hungry
But how does that matter to me?

Father finished the whole pack of cigarette
He bought in the morning
It seems he's tensed

An old man keeps working the whole day silently
At the corner of the college
To maintain the corporate status of his son
Forget it! How does it matter to me?

My day starts by dropping my beloved daughter
To her school
This is my daily routine
My very much favourite and affectionate routine
But today I'm not well
I am having chest pain and legs are also badly aching
Still I boarded the car with my daughter
My very much favourite and affectionate routine
My daughter stays very quiet inside the car
She doesn't talk to me at all
She's playing video games in her mobile
The car is almost there
I whispered,
"Dear, I'm having chest pain
I'm feeling very sick"
Without taking off her eyes from the phone,
She replied,
" Let it be father,
How does that matter to me!"

বাবার পাওনা?

যন্ত্রণাটা শুধু বাবার পাওনা?
আমার ঘুম ভাঙে সেই সকালে
ব্রেড টোস্ট অথবা স্যাণ্ডউইচ
ব্রেকফাস্টের শেষে ফ্রেশ হই
মেয়ের সাথে খেলা দিয়ে দিন শুরু
যন্ত্রণাটা শুধু আমার বাবার পাওনা?

ঠিক বেলা দশটায় এ.সি গাড়ী তৈরী
ওয়েল ড্রেসড আমি
গলায় টাই ঝুলিয়ে
মেয়েকে নিয়ে গাড়ীর দিকে এগোই
ওকে স্কুলে দিতে হবে
আমাকে তারপর কলেজে যেতে হবে—
একদম কর্পোরেট রুটিন আমার,
অবজ্ঞা শুধু বাবার পাওনা?

ঘড়ির কাঁটাকে হারাতে চাই আমি
গোটা দিনে গোটা পঁচিশ স্যালুট
আর আগে পিছে স্যার স্যার বলা
কর্মচারীদের দৌড়োদৌড়ি
আমি এনজয় করি।

বেলা দুটো বাজে, কখন বাবা এসেছে!
হয়ত ব্রেকফাস্ট না করেই
তাতে আমার কি এসে যায়!
হয়ত বাবার প্রেসার আজ দুশো বাই একশো
তাতে আমার কি এসে যায়!
হয়ত কলেজের নানা কাজ মেটাতে
বাবার ওষুধ খাওয়াও হয়নি আজ
তাতে আমার কি এসে যায়!
ক্ষিদের জ্বালায় বাবা দেখলাম

মিটিং-এর মাঝে নুন আর আদার কুঁচি খাচ্ছে
ছাড়ো তো, আমার কি এসে যায়!

সকালের সিগারেটের প্যাকেটটা এখনই শেষ হয়ে গেলো বাবার!
খুব টেনশানে আছে বলছিলো।
ছেলের জন্যে,
শুধু ছেলের কর্পোরেট স্ট্যাটাস টিকিয়ে রাখার নেশায়
এক বৃদ্ধ সারাদিন নিঃশব্দে কাজ করে কলেজের এক কোণে
দূর, তাতে আমার কি এসে যায়!

মেয়েটাকে স্কুলে পৌঁছে দিয়ে
আমার দিন শুরু হয়।
এটাই আমার রোজকার রুটিন—
আমার তৃপ্তি, ভালো লাগার রুটিন।
আজ একদম শরীর দিচ্ছে না
বুকে ব্যথা, হাত পায়ে অসহ্য যন্ত্রণা
তবু সকালে গাড়ীতে উঠলাম মেয়েকে নিয়ে
আমার তৃপ্তি, আমার ভালোবাসার রুটিন।
মেয়েটা গাড়ীতে উঠলেই বড় চুপ হয়ে যায়
একদম কথা বলে না আমার সাথে।
মেয়েটা একমনে মোবাইলে গেমস্ খেলছে
গাড়ী চলেছে গড়িয়াহাটের দিকে
চুপিসারে মেয়েকে বললাম—
মা, আজ বুকে খুব যন্ত্রণা, শরীরটা খুব খারাপ লাগছে
মোবাইল থেকে মুখ না সরিয়ে মেয়ে বলল
"ছাড়ো তো বাবা তাতে আমার কি এসে যায়!"

पापा को मिला प्रतिदान

यातना क्या सिर्फ पापा को ही मिलनी थी ?

सुबह सुबह ही मेरी नींद खुल जाती है l

ब्रेड टोस्ट या फिर सैंडविच,

ब्रेकफास्ट के बाद फ्रेश होता हूँ,

बेटी के साथ खेलते हुए दिन की शुरुआत होती है l

यातना क्या सिर्फ मेरे पापा को ही मिलनी थी ?

ठीक सुबह दस बजे ए सी गाड़ी हाज़िर है l

मैँ वेल ड्रेस्ड होकर,

गले में टाई लटकाए,

बेटी को लेकर गाड़ी की तरफ आगे बढ़ता हूँ l

उसको स्कूल तक छोड़ना है,

फिर मुझे कॉलेज जाना है,

मेरी रूटीन बिल्कुल कॉर्पोरेट सी है l

अवहेलना क्या सिर्फ पापा के लिए ही है ?

घडी की सुइयों को मैं टक्कर देना चाहता हूँ l

दिनभर में कम से कम पच्चीस सलूट

और आगे पीछे सर सर कहनेवाले

कर्मचारियों की भागदौड़,

मैं एन्जॉय करता हूँ l

दोपहर के दो बज रहे हैं l

पिताजी कब आ गए ?

शायद ब्रेकफास्ट भी नहीं कर पाए,

उससे मुझे क्या ?

शायद उनका प्रेशर आज दो सौ/१०० है

उससे मुझे क्या?

शायद कॉलेज के कामों के चक्कर में पापा दवाई भी नहीं ले सके।

उससे मुझे क्या ?

मीटिंग के बीच में देखा ,

भूख से कातर होकर पापा ,

नमक और अदरक के टुकड़ों से पेट भर रहे हैं,

छोड़िए तो,मुझे क्या ?

पापा का सुबह वाला सिगरेट पैकेट अभी ख़त्म हो गया,

कह रहे थे,बहुत टेंशन में है,

बेटे के लिए,!

सिर्फ बेटे का कॉर्पोरेट स्टेटस को बरक़रार रखने के लिए,

कॉलेज के एक कोने में एक बूढ़ा दिनरात बिना एक भी लफ्ज बोले काम करता जाता है,

दूर!उससे मुझे क्या ?

लड़की को स्कूल में पहुँचाकर

मेरे दिन की शुरुआत होती है,

यही मेरी रोज़ की रूटीन है ,

मेरी तृप्ति,मेरी पसंद की रूटीन

आज तवीयत कुछ बिगड़ी हुई सी है।

सीने में दर्द है,हाथ-पैर में भयंकर यातना,

फिर भी सुबह बेटी को लेकर गाड़ी में बैठा,

बेटी गाड़ी में बैठते ही एकदम चुप सी जाती है।

बात ही नहीं करती मुझसे ,

मोबाइल में गेम्स खेल रही है।

गाड़ी गड़ियाहाट के तरफ बढ़ती जा रही है,

चुपके से बेटी से कहा,

“बेटी,आज सीने में बहुत दर्द हो रहा है,तवियत ठीक नहीं लग रही।”

मोबाइल से आँख न हटाते हुए बेटी बोली,

छोड़िए पापा,उससे मुझे क्या फर्क पड़ता है। "